प्रश्न प्रातः क्लास 11-12-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। बाप बच्चों से पूछते रहते हैं हरेक बच्चों को अपने से पूछना है कि बाप से सभी कुछ मिला? किस2 चीज़ मेंकमी है। हरेक को अपने अन्दर झांकी पहननी है। जैसे नारद का मिसाल है। उनको कहा तुम अपनी सिकल आईने में देखो ल0को वरने लायक हो। तो बाप भी बच्चों से पूछते हैं क्या समझते हो, ल0 को वरने लायक बने हो? अगर नहीं, तो क्या2 खामियां हैं जिनको निकालने लिये बच्चे पुरुषार्थ करते हैं। खामियों को निकालने का पुरु0 करते हैं वा करते ही नहीं हैं। कोई2 तो पुरु0 करते रहते हैं। नये2 बच्चों को भी समझाया जाता है अपने अन्दर में देखो कोई खामी तो नहीं है। क्योंकि तुम सभी को परफेक्ट वनना है। बाप आते ही हैं परफेक्ट बनाने लिये। इसलिये एमआबजेक्ट का चित्र भी सामने रखा है। अपने अन्दर से पूछो हम इन जैसे परफेक्ट बने हैं? जो जिसमानी पढ़ाई पढ़ाने वाले टीचर देखते हो इस समय विकारी हैं। यह सम्पूर्ण निर्विकारियों का सिम्बुल है। आधा कल्प तुमने इन्हों की महिमा की है। तो अब अपने से पूछो हमारे में क्या2 खामियां हैं। जिसको निकाल हम अपनी उन्नति करें। और बाप को बतावें कि बाबा यह खामी है जो हम से निकलती नहीं है। कोई उपाय बताओ। बिमारी सर्जन द्वारा ही छूट सकती है ना। कोई कोई सहायक सर्जन भी होते हैं, डाक्टर से अन्डर सीखते2 होशियार डाक्टर बन जाते हैं। तो ईमानदारी से अपनी जांच करो मेरे में क्या2 खामियां हैं। जिस कारण मैं समझता हूं यह पद पा नहीं सकूंगा। बाप तो कहेंगे ना तुम इन जैसा बन सकते हो। खामियां बतावे तब बाप राय दे। बिमारी तो बहुत है। कोई2 में बहुत क्रोध है, लोभ है फाल्टु। या कुछ ज्ञान की धारणा नहीं हो सकती तो कोई को धारणा करा सके। बाप रोज2 बहुत समझाते हैं। वास्तव में इतने समझाने की जरूरत ही नहीं दिखाती। मंत्र का अर्थ भी बाप समझा देते हैं। बात तो एक ही है। बेहद के बाप को याद करना है और उनसे वरसा पाकर हमको ऐसा बनना है। और स्कूलों में 5 विकारों को जीतने की बात ही नहीं होती। यह बात अभी ही होती है। जो बाप आकर समझाते हैं। तुम्हारे में जो भूत है जो दुःख देते हैं उनका वर्णन करेंगे तो उनको निकालने की युक्ति बाप बतावेंगे। बाबा यह2 भूत हमको तंग करते हैं। भूत निकाल वाले के आगे वर्णन किया जाता है ना। तुम्हारे में कोई वह भूत नहीं। तुम जानते हो यह 5 विकारों रूपी भूत जन्म-जन्मान्तर के हैं। देखना चाहिए हमारे में क्या भूत है। उनको निकालने लिये फिर राय लेनी चाहिए। आंखें भी बहुत धोखा देने वाली हैं। इसलिये बाप समझाते हैं आत्मा को आत्मा समझो। दूसरों को भी आत्मा समझने की प्रैक्टीस डालो। इस युक्ति से तुम्हारी यह बिमारी निकल जावेगी। हम सभी आत्मायें हैं। तो भाई2 ठहरे ना। शरीर तो है नहीं। यह भी जानते हो हम सभी आत्मायें वापस जाने वाली हैं। तो अपने को देखना है सर्व गुण सम्पन्नबने हैं, नहीं तो हमारे में क्या अवगुण है। तो बाप भी उस आत्मा को बैठ देखते हैं। इन में यह खामी है तो उनको बैठ कैन्ट देंगे इस बच्चे का यह बिघ्न निकल जाये। अगर सर्जन से ही छिपाते रहेंगे तो कर क्या सकते। तुम अपनी अवगुण बताते रहेंगे तो राय बाप देंगे। जैसे तुम आत्मायें बाप को याद करते हो, बाबा आप कितने मीठे हो हमको क्या से क्या बना देते हो। बाप को याद करते रहो तो भूत भागते रहेंगे। कोई न कोई भूत है जरूर। बाप सर्जन को बताओ तो बाबा हमको इनकी युक्ति बताओ नहीं तो बहुत घाटा पड़ जावेगा। यह छोटा मोटा भूत निकलता ही नहीं है। तो बहुत घाटा पड़ जावेगा। सुनाने से बाप को भी तरस पड़ेगा यह माया के भूत इनको तंग करते हैं। भूतों को भगवाने वाला तो एक ही बाप है। युक्ति से भगाते हैं। समझाया जाता है इन भूतों को भगाओ। फिर भी यह भूत नहीं भागते हैं। कोई में विशेष रहता है कोई में कम। परन्तु है जरूर। बाप देखते हैं इनमें यह भूत है। दृष्टि देने समय अन्दर चलता है ना यह बहुत अच्छा बच्चा, और तो सभी इनमें अच्छे2 गुण हैं परन्तु बोलते कुछ नहीं हैं किसको समझा नहीं सकते हैं। माया ने जैसे गला ही बन्द कर दी है। इनकी गुला खुल जाये तो औरों की भी सिर्विस करने लग पड़ेंगे। दूसरों की सर्विस माना अपनी सर्विस शिव बाबा की सर्विस नहीं करते हैं। शिव बाबा खुद सर्विस करने आये हैं। कहते हैं इन जन्म जन्मान्तर के

कहते है इन के जन्म जन्मान्तर के भूतों को भगाना है। बाप बैठ समझाते हैं। यह भी जानते हैं। झाड़ धीरे2 वृधि को पाता है। छनते भी रहते हैं। माया विलारा डाल देता हैं। बैठे2 ख्याल बदली हो जाता है। जैसे सन्यासियों को घृणा आती है तो एकदम घर छोड़कर चले जाते हैं। यह भी माया ऐसा परछावा डालती हैं जो एकदम गुम हो जाते हैं। न कोई कारण न कोई बात। कनेक्शन तो सभी का बाप के साथ है। बच्चे तो नम्बरवार हैं। वह भी बाप को सच्च बतावे तो वह खाजानें निकल सकते हैं। और ऊंच पद पा सकते हैं। बाप जानते हैं, कई न बतलाने कारण अपने को बहुत घाटा डालते हैं। कितना भी समझावें परन्तु वह काम करने बिगर रह न सकेंगे। माया पकड़ लेती है। माया स्त्री अजगर है। सभी को पेट में डाल देती है। दुबण में गले तक फंसे हुये हैं। बड़े2 पंडित आदि हैं अपनी पंडिताई में ही मस्त रहते हैं। दूसरी कोई बात सुनते ही नहीं। कितना बाप समझाते हैं और कोई बात ही नहीं। सिर्फ बोलो दो बाप है। एक लौकिक बाप तो सदैव मिलता ही है। सतयुग में भी मिलता है तो कलियुग में भी मिलता है। ऐसे नहीं कि सतयुग में फिर पारलौकिक बाप मिलता है। पारलौकिक बाप तो एक ही बार आते हैं। पारलौकिक बाप आकर नर्क को स्वर्ग बनाते हैं। उनको भक्ति मार्ग में कितनी पूजा करते हैं। याद करते हैं। शिव के मंदिर तो बहुत हैं। बच्चे कहते हैं सर्विस नहीं हैं। और शिव के मंदिर तो जहां तहां हैं। वहां जाकर तुम पूछ सकते हो इनको क्यों पूजते हो? यह शरीरधारी तो नहीं हैं। यह है कौन? कहेंगे परमपिता परमात्मा। अब इन बिगर और कुछ कहेंगे नहीं। तो बोलो यह परमात्मा बाप है ना। इनको खुदा भी कहते हैं अल्ला भी कहते हैं। असर के परमपिता परमात्मा कहा जाता है। उनसे क्या मिलने का है यह कुछ भी पता है नहीं। वह घर से सभी को भेज देते हैं वा यहां आते हैं। भारत में ही शिव का नाम तो बहुत लेते हैं। शिवजयन्ति त्योहार भी मनाते हैं। कोई को भी समझाना बहुत सहज है। बाप भिन्न2 प्रकार से समझाते बहुत ही रहते हैं। तुम किसके पास भी जा सकते हो। परन्तु बहुत ठंढाई से, नम्रता से बात करनी चाहिए। तुम्हारा नाम तो भारत में बहुत फैला हुआ है। थोड़ी ही बात करेंगे तो साधु सन्यासी सभी समझ जावेंगे। यह ब्रह्माकुमारियां हैं। बहुत इनोसैन्ट भी है। गांव आदि तरफ तो बहुत हैं। तो फारेन में जाकर सर्विस करनी चाहिए। बहुत सहज है। आओ तो हम तुमको शिव बाबा के जीवन कहानी सुनावें। तुम शिव के पुजारी हो इन से क्या मांगते हो। हम आपको इनकी पूरी जीवन कहानी बता सकते हैं। दूसरे दिन फिर ल०ना० के मंदिर में जाओ। तुम्हारे अन्दर में खुशी रहती हैं। बच्चे चाहते हैं गांवों में सर्विस करें। सभी की अपनी2 समझ है ना। बाप कहते हैं पहले2 जाओ शिव बाबा के मंदिर में। फिर ल०ना० के मंदिर में। जाओ पूछो इन्हों को यह वरसा कैसे मिला। आओ तो हम ल०ना० के 84 जन्मों की जीवनकहानी सुनावें। शिव बाबा की जीवनकहानी अलग है, ल०ना० की अलग है। 84 जन्मों की कहानी मनुष्य का कहना रांग हो जाता है। देवी देवताओं के 84 जन्मों की कहानी कहना राईट है। वह भी ल०ना० से ही सिध होंगी। आओ तो हम इनके 84 जन्मों की जीवनकहानी सुनावें। गांवों वालों को भी जगाना है। तुम जाकर प्यार से समझावेंगे तुम आत्मा हो। आत्मा ही बात करती है। शरीर तो खत्म हो जाने वाला है। अभी हम आत्माओं को पावन बन बाप के पास जाना है। बाप कहते हैं मुझे याद करो। तो सुनने से ही वह भी कोशिश होगी। जितना तुम देहीअभिमानी होंगे उतना ही तुम्हारे में कोशिश आवेगी। अभी इतना इस देह आदि से, पुरानी दुनिया से पूरा वैराग्य नहीं आया है। यह तो जानते हो यह पूराना चोला छोड़ना है। क्या ममत्व इनमें रखना है। शरीर होते हुये शरीर में कोई ममत्व न होना चाहिए। अन्दर में यही तात रहे अभी हम आत्मायें अपने घर जावेंगे। पावन/बन कर घर जावेंगे। फिर यह भी दिल होती है ऐसे बाबा को कैसे छोड़ें। ऐसा बाबा तो फिर कब मिलेगा नहीं। तो ऐसे2 ख्याल करने से बाप भी याद आवेंगे। घर भी याद आवेगा। अभी हम घर जाते हैं। तुम समझते हो हमारे अभी 84 जन्म पूरे होते हैं। दिन में भल अपना धंधा आदि करो। गृहस्थ व्यवहार में तो रहना ही है। उसमें रहते हुये भी तुम

11-12-52

में यह रखो कि यह तो सभी खत्म हो जाना है। अभी हमको वापस अपने घर जाना है। बाप ने कहा है गृहस्थ व्यवहार में भी जरूर रहना है। नहीं तो कहां जावेंगे। धंधा आदि भल करो। बुद्धि में यह याद रहे यह तो सभी कुछ विनाश होना है। पहले हम घर जावेंगे फिर सुखधाम में आवेंगे। जो भी टाईम मिले अपने से बात करनी चाहिए। बहुत टाईम है। आठ घंटा धंधा आदि करो। आठ घंटा आराम भी करो। बाकी आठ घंटा बाप से यह वार्तालाप करो। स्नान करना है। स्नान कर फिर जाकर स्थानी सेवा करनी है। जितना भी समय मिले। शिव के मंदिर में, ल०ना० के मंदिर में, तुमको बहुत मिलेंगे। राम सीता के मंदिर में इतना नहीं। तुम कहां भी जावेंगे तो शिव के मंदिर जरूर होगा। दूसरा कोई विचार कर जाते नहीं। तो तुम बच्चों के लिये सुख है याद की यात्रा। याद में अच्छी रीत रहेंगे तो तुम जो भी मांगो मिल सकता है। प्रकृति दासी बन जाती है। उनके सिकल आदि भी ऐसे कशिश वाले रहते हैं। कुछ भी मांगने की दरकार नहीं। सन्यासी में भी कोई2 बहुत पक्के होते हैं। बस इसी निश्चय में बैठते हैं हम ब्रह्म में जाकर लीन होंगे। इस निश्चय में बहुत पक्के रहते हैं। फिर ऐसे बैठे2 समझते हैं हम जाते हैं। कितना उन्हों का अभ्यास होता है। मालूम पड़ता है हम इस शरीर को छोड़ जाते हैं। परन्तु सच तो है रांग रास्ते पर। बड़ी मेहनत करते हैं ब्रह्म में लीन होने लिये। भक्ति मार्ग में दीदार के लिये कितनी मेहनत करते हैं। जीवन भी देदेते हैं। आत्मघात नहीं होता। जीवघात होता है। आत्मा तो है ही। वह जाकर दूसरा शरीर अथवा जीव लेती है। तो तुम बच्चे सर्विस का अच्छी रीत शौक रखो। तो बाप भी याद आवेंगे। यहां भी मंदिर आदि बहुत हैं। तुम योग में पूरा रहकर किसको कुछ भी कहेंगे, कोई विचार नहीं आवेगा। योग वाले का तीर पूरा लगेगा। तुम बहुत सर्विस कर सकते हो। कोशिश कर देखो। परन्तु पहले अपने अन्दर को देखना है हमारे में माया का कोई भूत तो नहीं है। माया के भूत वाले थोड़ेही सफलता को प्राप्त कर सकते हैं। सर्विस तो बहुत हैं। बाबा तो नहीं जा सकते हैं ना। क्योंकि बाप साथ में है। बाप को कहां किचड़े में ले जावें। किसके साथ बोलें। बड़े आदमी कब मेहतर आदि से नहीं बोलने चाहते। बाप भी बच्चों से ही बोलने चाहते हैं। बाकी तो सभी मनुष्य मेहतर से, जानवरों से भी बदतर हैं। तो बच्चों को सेवा करनी है। गायन भी है सन रोज फादर। कई बच्चे कहते हैं बाबा बाहर नहीं जाते। अरे बाबा क्या जाकर करेंगे। बाप ने तो बच्चों को होशियर बनाया है। अच्छे2 बच्चे हैं जिनको सर्विस का शौक रहता है। जैसे एक कमिटि दिल्ली में बनी है भल कुछ भी है, चांस मांगते हैं हम गांवों जाकर सर्विस करेंगे। बाबा कहते हैं भल जाओ। सिर्फ बाबा खुद फील्डीग चित्र बना रहे हैं। चित्रों बिगर किसको समझाना डिफीकल्ट लगता है। रात दिन यही ख्यालात रहती है। हम औरों का जीवन कैसे बनावें। हमारे में जो खामियां हैं वह कैसे निकाल उन्नति को पावें। तुमको खुशी भी होती है। कहते हैं बाबा यह 8-9 दिन का बच्चा है। ऐसे तो बहुत ही निकलते हैं, जल्दी ही सर्विस लायक बन जाते हैं। हरेक को यह भी ख्याल रहता है हम अपने गांवों को उठावें। हम जिन्स भाईयों की सेवा करें। चैरिटी बिगेन्स एट होम। सर्विस का शौक बहुत चाहिए। एक जगह ठहरना न चाहिए। चक्र लगाते रहे। सन्यासी लोग रमण करते रहते हैं। अभी तो सन्यासियों में भी बहुत बुद्धि को पा गये हैं। बहुत नये2 भी निकल पड़ते हैं। तो उन्हों की महिमा भी बहुत निकलती है। चमक पड़ते हैं। नये2 बहुत निकलते रहते हैं। टाईम तो बहुत थोड़ा है ना। 12-15 वर्ष में बहुत निकल होंगे। कितने बड़े2 कहानी उन्हों की बन जाती हैं। ऐसी आत्मा आकर प्रवेश करती है जो कुछ न कुछ शिक्षा बैठ देते हैं तो नाम हो जाता है। यह तो बेहद का बाप बैठ शिक्षा देते हैं। कल्प2 मिसल यह स्थानी कल्प वृक्ष बढ़ेगा। निराकारी भी झाड़ है ना। उनमें सभी सेक्शन है। आगे चल वह भी सा० करेंगे कैसे यह झाड़ बना हुआ है। वहां से फिर नम्बरवार आत्मायें आती हैं। शिव बाबा की बड़ी लम्बी माला का झाड़ बना हुआ है। इन सभी बातों को याद करने से भी बाप ही याद आवेगा। उन्नति जल्दी होगी। यह तो ठीक है डामा जो पास हुआ वह ठीक है। भूलें भी होती है। ओपनिंग पर यह कटवाना, खिलाना, पिलाना इनकी कोई दरकार नहीं है। हमारा भोजन तो है ज्ञान का। हां थोड़ा करके आफर की चाय आदि की।

जास्ती नहीं। हम बन्दरों की बैठ इतनी महिमा करें। नहीं। युक्ति से समझाना होता है। काम निकालने लिये चलाना पड़ता है। ऐसे नहीं उनके भाव में आ जाना चाहिए। बन्दरों को हम इतना रेसपेक्ट नहीं दे सकते। अन्दर में नशा रहता है हम कहां। यह कहां। भल कितना भी बड़ा आदमी हो, परन्तु अभी देरी है। तुम्हारे में योग की ताकत इतनी आ जावेंगी जो किसको थोड़ा ही समझाने से झट तीर लग जावेगा। यह भी ज्ञान बाण है ना। बाण जिसको पूरा लगता है तो घायल कर देते हैं। पहले घायल होते हैं फिर मरते हैं। बाप का बनकर बाप को प्यार नहीं रखते हैं। कहते हैं ना मिटरा पूर त पूराए ...। जो अच्छी रीत याद करते हैं उनकी कोशिश होती है। सारा दिन जो लड़ते झगड़ते रहते हैं वह कोशिश नहीं कर सकते हैं। फिर भी उठाने की कोशिश की जाती है। यह भी बाप जानते हैं राजधानी में सभी प्रकार के चाहिए। फिर भी ऐसे समझ बैठ थोड़ेही जावेंगे। बाप तो कहेंगे उन्नति को पाओ। बहुत2 अथाह सुख है। जितना पुरुषार्थ करेंगे उतना ही ऊंच पद पावेंगे। फेल होने से एक तो सजा भी भोगेंगे फिर सा० भी होगा। यह भी तुम जानते हो किसके आगे सजा खाते हैं। फिर जार जार आंखों से पानी आता है। फिर सजा भी खाते हैं। कैसे चलता है। बहुत पछताते हैं। नाहक यह किया। परवस हो गया। माया यहां ही परवस करती है। सुधरते हो नहीं। माया बच्चों को क्या कर देती है। हम बसर बनाते हैं माया भूक बना देती है। फेंकने जैसा। बाप दादा दोनो इकट्ठे हैं तो ख्यालात चलती है कैसे छी छी वृति है, क्या उनका हाल होगा। कितनी बुरी गति उस समय होगी। ताजरज और भोरध्वज की कथा भी बनाई हुई है। सजाओं की भी कथाएं हैं। बाप तो जानते हैं ना ऐसे2 लक्षण वाले भी हैं। वह क्या पद पावेंगे। भल सतयुग में आवेंगे परन्तु क्या पद पावेंगे। तुम कितना राज-भाग पाते हो। गरीब निवाज कितने आ जाते हैं। साहुकार आ न सके। प्राईमिनिस्टर कब ज्ञान लेने आ न सकें। बाप तो कहेंगे बिचारा क्या लेगा। यह ज्ञान तो सभी के लिये है। सन्यासियों को भी तुम बोलो बाप को याद करो तो शांतिधाम चले जावेंगे। आगे चलकर तुम्हारे बात को याद करें। इन्होंने बात तो बहुत अच्छी सुनाई है हम तो रहने का घर है। अभी देरी है। अजन बच्चों की वह अवस्था चाहिए। वेस्ट टाईम करने से कोई काम के न रहेंगे। बाप को तो तरस पड़ता है। अन्दर में तो जानते हैं यह ड्रामा बना हुआ है। कल्प2 ऐसे ही बने हैं। परन्तु समझावेंगे ऐसे जो वह साझे बाबा को मेरे ऊपर बहुत तरस पड़ता है। हम भी क्यों नहीं बाप की श्रीमत परचलें। यह बगीचा है उसमें हरप्रकार के फूल हैं। गुलाब भी है टांगर भी है नजर पड़ती है तब तो कहते हैं ना। यह कितना अच्छा फूल है। कितना लव है बाप दादा में। दोनो तरफ लव जाता है ना। दादा को निकाल देंगे तो बाकी क्या रहेगा। कुछ भी नहीं। शिव बाबा कोई इशारा कहते हैं ना। मुझे याद करो। मुरली कोई इशारा चलती है। सौदा करने वाला तो चाहिए ना। नहीं तो सौदा होगा कैसे। ऐसे बहुत अच्छे2 महावीर है। उनका भी यह हाल हो जाता। माया एकदम गिरा देती है। विवेक भी कहता है मायावड़ी जबरदस्त है। आधा कल्प एकदम सुला देती है। तुम बच्चों ने कुरुती कल-युग-धुयुध नहीं देखी है। बाबा तो अनुभवी है। सारी लाईफ पास की है। सिर्फ विलायत में नहीं गये हैं। वह भी जाने वाले थे। सारी तैयारी की थी। परन्तु ड्रामा में नहीं था। कितना खर्चा किया। गरीबी भी बड़ी मीठी पास की, साहुकारी भी बड़ी मीठी पास की। इसको कोई चरित्र नहीं कही जाती लाईफ सुनाते हैं। निक्सन की कहानी देखो कैसी है। गरीब से कैसे साहुकार बना है। खुद बैठ कहानी लिखी है। कैरे में चढ़ा हूं। अभी अमेरिका का राष्ट्र-पति है। हम तो कहेंगे बिचारा बाकी थोड़ा सुख पावेंगे। वह भी कोई सुख थोड़ेही है। सच्चा सुख तो तुम बच्चों को मिल रहा है और मिलना ही है। जितना याद करेंगे।

अच्छा मीठे2 सिकीलधे रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुड मार्निंग। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।